International Journal of Information Movement *Vol. 8 Issue III* *(July 2023)*
Website: www.ijim.in *ISSN: 2456-0553 (online)* **Pages** **52-55**

प्रकृति के सुकुमार कवि. सुमित्रानंदन पंत

भारती
शोधार्थी, हिन्दी विभाग
गुरूकुल कांगडी (समविश्वविद्यालय), हरिद्वार (उतराखण्ड़)
ईमेल– bhartisharma5664@gmail.com

1.0 जीवन–परिचय :

सुमित्रानंदन पंत का जन्म 20 मई 1900 में उतरांचल के जिला अल्मोड़ा के कौसानी गांव में हुआ। जन्म के कुछ घंटो के बाद इनकी माता सरस्वती देवी चल बसी। पर मां की गोद का अभाव प्रकृति की गोद ने बहुत कुछ पुरा कर दिया। इनके पिता गंगादत पंत चाय के बगीचे के मैनेजर थे और स्वतंत्र रूप से लकडी का व्यापर करते थे। पन्त का प्रारम्भ में नाम गोसाईदत रखा गया। गोसाई अपने आठ भाई–बहनों में सबसे छोटे थे। इनकी प्रारंभिक शिक्षा कौसानी के वर्नाक्यूलर स्कूल में हुई। उसके पश्चात् हाई स्कूल की शिक्षा प्राप्त करने के लिए इन्हें अल्मोड़ा भेजा गया। यहाँ पर इन्होंने अपना नाम बदलकर सुमित्रानंदन पंत रख लिया। एक और बात अल्मोडा की विशेष भी जिस पर पंत ने अधिक ध्यान दिया। 'इसी क्रम में नेपोलियन के एक चित्र को देखकर उन्होंने बाल भी बढ़ा लिए।[i]

जिस प्रकृति परिवेश में पंत ने जन्म लिया तथा जहां इन्होंने शिक्षा–दीक्षा प्राप्त की वह स्वयं कविता से कम आकर्षक और लुभावना नहीं है। कविता करने की प्रेरणा सर्वप्रथम पंत को प्रकृति से ही मिली। 'पंत में यथार्थ के विषम और दारूण रूप से अभाव का कारण कुछ सीमा तक उनके प्रकृति मोह को भी माना जाता है।[ii] इनके मन में प्रकृति के प्रति लगाव था कि ये सांसरिक मोह में पूर्ण रूप से आसक्त न हो सके।

छोड़ द्रुमों की मृदु छाया
तोड़ प्रकृति से भी माया
बाले, तेरे बाल–जाल में कैसी उलझा दू लोचन ?

इन पंक्तियों में स्पष्ट होता है कि कवि का मन सांसारिक सौन्दर्य की अपेक्षा प्रकृति सौन्दर्य में अधिक था।

2.0 सुमित्रानंदन पंत का काव्य–सृजनः–

पंत ने काव्य सृजन छायावाद युग में प्रारम्भ किया किन्तु अन्य छायावादी कवियों की भाँति वे एक जैसे नहीं थे उनके काव्य का क्रमिक विकास हुआ। अपने काव्य–सृजन के आरंभ में वे छायावाद से जुडे रहे, दूसरे चरण में सामाजिक चेतना की ओर अग्रसर हुए फिर अनेक महान लेखकों के सम्पर्क में आने से इनकी विचारधारा बदली ओर ये अरविन्द से प्रभावित होकर काव्य सृजन करने लगे। जीवन तथा काव्य क्षेत्र के चौथे चरण में पंत का सम्न्यवादी रूप हमारे सामने उभर कर आता है। जिनका वर्णन इस प्रकार हैः–

2.1 प्रथम सोपान– पंत के काव्य यात्रा का प्रथम सोपान जिसे सौन्दर्य सोपान भी कहा जाता है। 'वीणा इनके आरम्भिक गीतो का संग्रह है इसमें 1918–19 तक की 63 कविताएं इसमें संकलित है भावात्मक तथा शिल्प की दृष्टि से यये रचनाएं कवि की विकासोन्मुख प्रतिभा का परिचय करवाती है। 'वीणा' के साथ–साथ 'पल्लव' और 'गुंजन' भी छायावादी युग की कविताएँ हैं। पंत की प्रकृति रूपों की आहलादमयी अनुभूमि वीणा में कई जगह पाई जाती है।

''प्रथम रश्मि का आना रंगिणि! तुने कैसे पहचाना ?
कहाँ–कहाँ हे बालविहंगिनी ? पाया तूने यह गाना ?[iii]

पंक्तियों से कवि ने प्रकृति के विविध रूपों एवं उपादानों का चित्रण किया है ग्रन्थि (1920) एक दीर्घ विरह–गीत है। सम्पूर्ण विरह किशोर भावुकता से शुरू होता है और वहीं आकर खत्म हो जाती है।

'लाज की मादक सुरा सी ललिमा
फैल गालों में, नवीन गुलाब से
छलकती थी बाढ़ सी सौन्दर्य की
अधखुले सस्मित गढ़ों से, सोंप से।[iv]

'पल्लव (1928) पंत के छायावादी कला का प्रौढ़ काव्य संग्रह है। इसकी भुमिका में स्वयं पंत ने लिखा है– ''नवीन युग अपने लिए नवीन वाणी, नवीन जीवन, नवीन रहस्य, नवीन साहित्य ले आता है और पुराना जीर्ण पतझड़, इस नवजात बसन्त के

लिए बीज तथा खाद रूप बन जाता है।[v] उनकी बाणी नये गीत, नये छंद तथा नयी भावनाएं लेकर फूटने लगती है।'पल्लव' की भूमिका को छायावाद का मेनीफेस्टों (घोषणापत्र) भी कहा जाता है। 'पल्लव' के अंत में पंत जी जगत के विषम 'परिवर्तन' के नाना दृश्य सामने लाए हैं। इसकी प्रेरणा शायद उनके व्यक्तिगत जीवन विषम स्थिति ने दी है।[vi]

अहे निष्ठुर परिवर्तन।
अहे वासुकि सहस्रफन।
लक्ष अलक्षित चरण तुम्हारे चिन्ह निरंतर
छोड़ रहे हैं जग के विक्षत वक्षस्थल पर।

2.2 द्वितीय सोपान– पंत के काव्यात्मक विकास के दुसरे चरण में सामाजिकता का बोध होता है। अब कवि कल्पना अनुभूति तथा सौन्दर्य को पार करते हुए मानवतावाद की ओर बढ़ रहा है। 'युगंत, युगवणी, ग्राम्या इस युग की प्रमुख रचनाएं है।
'युगवाणी' में नरजीवन पर ही विशेष रूप से दृष्टि जमीं रहने के कारण कवि के सामने प्रकृति का वह रूप भी आया है जिससे मनुष्य को लड़ना पड़ा है।[vii]

वहिन, बाढ़, उल्क, झंझा की भीषण भू पर।
कैसे रह सकता है कोमल मनुज कलेवर।।

कहना ना होगा कि पंत के परवर्ती सृजन का प्रारंभ 'युगवाणी से ही मानना चाहिए। स्वयं पंत ने अपनी कृति 'शिल्प और दर्शन' में कहा गया है–''गुजंन और ज्योत्सना में मेरी सौन्दर्य भावना आत्मकल्याण और विश्व–मंगल को अभिव्यक्त करने के लिए उपादान की तरह प्रयुक्त हुई है और मैं सुन्दरम् से शिवम् की भुमि की ओर उन्मुख हुआ हूँ''[viii]। युगवाणी का प्रारंभ बापू कविता से हुआ है जिसका प्रकाशन वर्ष 1939 है। इसमें गांधी जी का प्रभाव स्पष्ट झलकता है और साथ ही साथ मार्क्स के विचारों को भी पंत ने गृहण किया है।
भौतिकवाद को आत्मदर्शन का साधन मानते हुए पंत लिखते है–

'नहीं जानता, युग विवर्त में होगा कितना जनक्षय
पर मनुष्य को सत्य अंहिंसा इष्ट रहेंगे निश्चय।[ix]

2.2.1 **ग्राम्या–** ग्राम्या पंत की यथार्थवादी रचना है। यह एक संग्रह के रूप में 1940 में प्रकाशित हुई है। इसमें ग्रामीण जीवन के दुख दर्द उनकी पीडा का यथार्थ चित्रण कवि ने किया है–
'यह तो मानव–लोक नहीं रे, यह है नरक अपरिचित
यह भारत का ग्राम। सभ्यता संस्कृति से निर्वासित।[x]
ग्राम्या कविता के विषम में डॉ. नगेन्द्र का कथन है– ''युगवाणी प्रगतिवादी पंत का सिद्धान्त–वाक्या था, ग्राम्या उनका प्रयोग'' ।[xi]
ग्राम्या का जो भाव पक्ष है उसी के अनुरूप इसमें पंत का शिल्प पक्ष भी दिखाई देता है। इस कविता के द्वारा वे ग्रामीण जन–मानस की पीड़ा के करीब नजर आते हैं।
''ग्राम्या' के विषय में स्वयं पंत ने लिखा है– ''इस संग्रह की कविताओं में पाठको को ग्रामीणों के प्रति केवल बौद्धिक सहानुभूति ही मिल सकती है। ग्राम–जीवन में मिलकर, उसके भीतर से ये अवश्य नहीं लिखी गई।[xii]
इसमें पंत ये कहना चाहते है कि गांवों की वर्तमान दशा के केवल प्रतिक्रिया व्यक्त करना उचित नहीं होता। वे यथार्थ को भी आदर्श में प्रस्तुत करने का प्रयास करते हैं।

2.3 **तृतीय सोपान–** पंत के काव्य सृजन के तीसरे चरण को नवचेतना सोपान की भी संज्ञा दी जा सकती है क्योंकि यहाँ आते–आते पंत पूर्णतया अध्यात्मवादी हो गये हैं। वे जीवन और जगत की समस्याओं का समाधान अध्याय में खोजने लगे हैं। इस चरण में 'स्वर्ण किरण' तथा 'स्वर्णधूलि' की रचनाएं आती हैं। इन रचनाओं पर विशेष रूप से अरविन्द दर्शन का प्रभाव पड़ा है। समन्वय को लेकर लिखी गई ये रचनाएं मानव के अर्न्तविकास पर जोर देती हैं। बच्चन जी ने इन रचनाओं के विषय में लिखा है– '' इनक अधिकांश भाग पर अरविन्द के दर्शन और विचारों की छाप पडी है। श्री अरविन्द्र के दर्शन, विचार–भावों और स्वपनों की व्याख्या 'स्वर्णकिरन' और 'उतरा' में की गई है।[xiii]
पंत ने 'स्वर्ण' को चेतना के प्रतीक रूप मे माना है। स्वर्णकिरन की प्रथम कविता 'अभिवादन' में कवि का अरविन्दवादी दृष्टिकोण स्पष्ट हो जाता है।

हंसी, लो, स्वर्ण किरण
शिखर आलोक वरण
विचरती स्वर्ण किरण
धरा पर ज्योति चरण।[xiv]

कवि ने किरण को प्रतीक मानकर ब्रहमा की शक्ति की चेतना का चित्र उपस्थित करने का प्रयास किया है। स्वर्णकिरन में सबसे लंबी तथा सुन्दर कविताएं अशोक वन, स्वर्णोदय है। दोनो ही प्रतीकात्मक कविताएं हैं। स्वर्णकिरन के बाद की रचना स्वर्णधूलि के पंत के काव्य का व्यावहारिक पक्ष हमारे सामने आता है। इस कविता पंत का कथन है– '' स्वर्णधूलि का धरातल सामाजिक है''

अतः स्वकीया, या परकीया, जन समाज की है परिभाषा
काम–मुक्त और प्रीतियुक्त, होगी मानवता मुझको आशा।[xv]

2.3.1 **उतरा–** स्वर्णकिरन, स्वर्णधूलि के पश्चात पंत की 'उतरा– शीर्षक कृति का प्रकाशन 1949 में हुआ। इस रचना में भी कवि का आध्यात्मिक स्वर प्रस्फुटित हुआ है लेकिन यहां आकर कवि भाववादी हो गया है। यहाँ कवि यह मनोकामना करता है कि मानव अपने आन्तरिक विकास पर ध्यान दें। उतरा के संबध में पंत जी का कथन है– ''उतरा को सौन्दर्यबोध तथा भाव– ऐश्वर्य की दृष्टि से अब तक की अपनी सर्वोत्कृष्ट कृति मानता हूँ। उसके अनेक गीत जो 'चिदम्बरा' में संकलित है पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करेंगे। 'उतरा' के पद नवमानवतावाद के मानसिक आरोहण की सक्रिय चेतन आकांक्षाओ से झृकंत है। चेतना की ऐसी क्रियाशीलता मेरी अन्य रचनाओं में नहीं मिलती''।

इसके अलावा रजतशिखर, शिल्पी, सौवर्ण, अतिमा आदि इस सोपान की महत्वूर्ण कृतियां है।

2.4 **चतुर्थ सोपान–** अपने काव्य सजृन के इस चरण में पंत ने अपने जीवन के पिछले अनुभव की परिपक्वत के आधार पर काव्य को नया मोड़ देने का प्रयास किया है। शिल्प की दृष्टि से भी काव्य में नवीनता आई है। 'पंत के काव्य विकास का यह चौथा चरण इसलिए भी महत्वपूर्ण माना जायेगा क्योंकि इनमें उन्होंने पहली बार महाकाव्य की सृष्टि की है।[xvi] यह लोकायतन के नाम से सन् 1964 में प्रकाशित हुई है। इसके अलावा–किरण–वीणा, पौ फटने से पहले, गीतहंस, समाधिता, आस्था, सत्यकाम आदि चौथे चरण की महत्वपूर्ण कृतियां है।

आधुनिक कवि की भुमिका के रूप में पंत ने लिखा है– ''सत्य शिव में स्वयं निहित है, जिस प्रकार फूल में रूप–रंग है, फल में जीवनोपयोगी रस और फूल की परिणति कला में सत्य के नियमों द्वारा होती है, उी प्रकार सुन्दरम् की परिणति शिव में सत्य द्वारा होती है''।[xvii]

3.0 **कला और बूढ़ा चाँद–** जिस समय ये कविता लिखी जा रही थे तब कवि के मन में कई आन्दोलन चल रहे थे। उन्हें लगा कि फिर उनकी लोक–साधना छायावा की ओर उन्मुख हो रही है। इस संग्रह की सभी कविताएँ मुक्त छंद मे लिखी गई हैं। अपने इस कृति को पंत ने 'रश्मियदी काव्य' कहा है। 'कला और बूढ़ा चाँद' में कवि चिन्तन के उच्च शिखर पर पहुँच कर छन्दों की पायल उतारकर काव्य रचना करना चाहता है–

मैं शब्दों की ईकाईयों को रौंदकर
संकेतो में, प्रतीकों में बोलूँगा
उनके पंखो को असीम पर फैलाऊंगा।[xviii]

3.1 **लोकायतन–** सुमित्रानंदन पंत के काव्य की चरम उपलब्धि 'लोकायतन' जिसका प्रकाशन वर्ष 1964 है। इस बात में कोई सन्देह नहीं है कि पंत पर सबसे अधिक प्रभाव तक तो अरविन्द दर्शन का पड़ा और दूसरा गाँधी जी का है। ये दोनों महापुरूष पंत के जीवन में' प्रेरणा स्त्रोत रहें। इस सम्बन्ध में बच्चन सिंह लिखते हैं– ''पंत की साधना चरम उपलब्धि है 'लोकायतन' यह उनकी महत्वाकांक्षापूर्ण कृति है– कलेवर में लगभग कामायनी से छह गुना बड़ी। इस महाकाव्य का मूल प्रतिपाघ सामूहिक मुक्ति है जो गाँधीवाद और अरविन्द दर्शन दोनों से प्रभावित है।[xix] भारतीय जाति के स्वाधीनता संघर्ष के महत्वपूर्ण चरणों को गाँधी के नाम से जोड़कर कवि ने लिखा है–

नवयुग के प्रथम पुरूष तुम
गत युग के अन्तिम मानव
जीवन–विकास क्रम तुमसे
नर–वर से भू पर सम्भव।[xx]

3.2 **सत्यकाम–** यह कृति आधुनिक परिवेश और परिस्थतियों को ध्यान में रखकर रची गई है। इसमें कुल ग्यारह सर्ग हैं जिसका कथानक 'छान्दोग्य उपनिषद' से लिया गया है। यह ऐसी दोहरी कृति है जो एक तरफ औपनिषद आख्यान को लेकर चलती है तो दूसरी तरफ आधुनिक बोध की अभिव्यक्ति भी करवाती है।

4.0 **निष्कर्ष–** निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि प्रकृति के प्यारे इस कव ने अपने काव्य सर्जृन के द्वारा साहित्य में अपना विस्मरणीय योगदान दिया है। कवि ने प्रकृति के चित्रण के साथ–साथ मानवीय संवेदनाओं का भी चित्रण किया है। 'ग्राम्या' जैसी कविताओं के माध्यम से जन–जीवन की समस्याओं को पाठक से परिचित करवाने का प्रयास कवि ने किया है। छायावाद से आगे चलकर कवि पर अरविन्द्र दर्शन, मार्क्स तथा गाँधीवाद का प्रभाव भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इस संबंध में डॉ0 बच्चन सिंह ने लिखा है–'छायावादी संस्कारों से सर्वथा मुक्त होने की कोशिशों के बावजूद पंत कभी भी उससे मुक्त न हो सके''[xxi]। साहित्य के प्रेमी इस महान कवि के काव्य–सर्जृन को हमेशा पढेंगे।

5.0 संदर्भ:

[i] सुमित्रानंदन पंत और छायावाद, डॉ0 सुमन कंवर, पृ0/5
[ii] हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ0 नगेन्द्र, पृ0 /535
[iii] हिन्दी साहितय का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृ0 /550
[iv] आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, बच्चन सिंह, पृ0 171
[v] आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, बच्चन सिंह, पृ0 171
[vi] हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृ0 /555
[vii] हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृ0/
[viii] सुमित्रानंदन पंत का काव्य सृजन, डॉ0 सुमन कंवर, पृ0/ 23
[ix] आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ0 बच्चन सिंह, पृ0 /176
[x] पंत, ग्राम्या, पृं0 /16
[xi] सुमित्रानंदन पंत का परिवर्तित काव्य, सुमन कंवर, पृ0/ 24
[xii] पंत, ग्राम्या का निवेदन
[xiii] कवियों में सौम्य पंत, डॉ0 हरिवंश राय बच्चन, पृ0/ 104
[xiv] सुमित्रानंदन पंत का काव्य–सृजन, डॉ0 सुमन कंवर, पृ0/ 27
[xv] स्वर्णधूलि, पंत, पृ0 /112
[xvi] सुमित्रानंदन पंत का काव्य–सृजन, डॉ0 सुमन कंवर, पृ0 /21
[xvii] हिन्दी का गद्य साहित्य, रामचन्द्र तिवारी,पृ0/ 808
[xviii] कला और बूढ़ा चाँद, सुमित्रानंदन पंत, पृ0/192
[xix] आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ0 बच्चन सिंह, पृ0/176
[xx] लोकायतन, सुमित्रानंदन पंत, पृ0 140
[xxi] आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ0 बच्चन सिंह, पृ0/180